ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

मतदान व्यवहार के अध्ययन के राजनीतिक एवं निर्धारक तत्व

Political and Determinative Elements of The Study of Voting Behavior

Paper Submission: 04/06/2021, Date of Acceptance: 15/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

बीना राय
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
आर0जी0 पी0जी0 कॉलेज,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

राखी
शोध छात्रा
राजनीति विज्ञान विभाग
आर0जी0 पी0जी0 कॉलेज,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

चुनाव किसी भी लोकतंत्र की प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग होता है जिसमें मतदाता अपनी पसंद के प्रत्याशी को वोट करके उनका चुनाव करते हैं। विश्व के अधिकांश देशों में सार्वभौम मताधिकार की प्रक्रिया को अपनाया गया है। भारत में एक व्यस्क नागरिक को स्वतंत्र रूप से अपने प्रतिनिधि का चुनाव करने की स्वतंत्रता प्राप्त है। परन्तु महत्वपूर्ण तथ्य है कि वह मतदान करते समय किन कारकों से प्रभावित होता है मतदाता के मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्वों से ही लोकतंत्र की सफलता अथवा असफलता का निर्णय होता है।

Election is an essential part of the process of any democracy in which voters elect the candidate of their choice by voting for them. Universal suffrage has been adopted in most of the countries of the world. An adult citizen in India has the freedom to choose his representative freely. But the important fact is that what factors affect him while voting, the determinants of the voting behavior of the voter decide the success or failure of the democracy.

मुख्य शब्द : सर्वभौम मताधिकार, लोकतंत्र, व्यस्क नागरिक, मतदान व्यवहार।
Universal Suffrage, Democracy, Adult Citizens, Voting Practices

प्रस्तावना

आधुनिक राजनीति में व्यवहारवादी दृष्टिकोण का व्यापक प्रयोग होने लगा है। मतदान व्यवहार का अध्ययन व्यवहारवादी राजनीति का प्रारम्भ माना जाता है। मतदान व्यवहार का अध्ययन राजनीति विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है।

मतदान व्यवहार का अर्थ

मतदान व्यवहार से अभिप्राय एक मतदाता के उस चुनाव व्यवहार से है जिसका प्रदर्शन वह चुनाव अभियान एवं मतदान में करता है। प्रजातांत्रिक राजनीतिक व्यवस्थाओं में मतदान व्यवहार का अध्ययन हुआ परन्तु मतदान व्यवहार का कोई सर्वसम्मत सिद्धान्त स्थापित नही हो सका जिसके आधार पर भविष्यवाणी की जा सके। इसमें विभिन्न प्रकार की बाधाएँ है उदाहरण स्वरूप अध्ययनों में राजनीतिक, सामाजिक एवं वातावरणीय तत्वों का अध्ययन नहीं किया जाता है। एक निर्वाचन क्षेत्र के अध्ययन निष्कर्ष दूसरे निर्वाचन क्षेत्र पर लागू नही हो पाते हैं। विभिन्न विद्वान मतदान व्यवहार की परिभाषाएँ देते हैं–

1. गेब्रियल ए. आमंड ने कहा है कि ''यह राजनीतिक उद्देश्य की ओर निश्चित अनुज्ञापन है, जैसे–नेतृत्व, नीतियाँ एवं मुद्दे आदि। यह एक विशिष्ट प्रकार की 'राजनीतिक संस्कृति' जैसे 'संक्रमण कालीन' में निहित भूमिका को प्रदर्शित करता है। 'राजनीतिक संस्कृति' के दृष्टिकोण को अपनाने से यह स्पष्ट नहीं हो जाता है कि एक व्यक्ति की मतदान में प्राथमिकताएँ भिन्न समय में कैसे, क्यों एवं किन परिस्थितियों में होती है।'
2. डोनाल्ड ई0 स्टोक्स के अनुसार–''मतदान व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को सामूहिक निर्णयों में समहित करने का एक साधन है। मतदान व्यवहार से अभिप्राय मतदाता के मत देने तथा इसे प्रभावित करने वाले कारकों के अध्ययन से है। मतदाताओं के मतदान व्यवहार का विश्लेषण करना एक कठिन कार्य है क्योंकि यह विविध प्रकार के बाह्यों एवं आंतरिक कार्यों के

द्वारा प्रभावित होती है तथा विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों के मतदाताओं के आचरण में काफी भेद होता है।''

उपरोक्त परिभाषित अर्थ से तात्पर्य यह है कि मतदान की प्रक्रिया में एक मतदाता सरकार तथा विभिन्न राजनीतिक दल के कार्यकलापों का पुनरावलोकन करता है एवं उन पर अपना निर्णय देना है जो विजय एवं पराजय में परिलक्षित होता है। विभिन्न लोक कार्यों के पुनरावलोकन के लिए मतदाताओं के पास पर्याप्त राजनीतिक सूचनाओं का होना आवश्यक है एवं ऐसा तभी सम्भव है जब मतदाता समझदार और राजनीतिक दृष्टि से सचेत हो।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मतदान व्यवहार के अर्थ को समझने का प्रयास करना।
2. भारत में मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्वों का विश्लेषण करना।

मतदान व्यवहार के अध्ययन के राजनीतिक पक्ष

मतदान व्यवहार के अध्ययन में यह जानना आवश्यक है कि व्यक्ति राजनीति में क्यों भाग लेते हैं तथा वे कौन से कारण हैं जो उसे मतदान करने के लिए बाध्य करते हैं। मताधिकार का प्रयोग राजनीतिक सहभागिता का सर्वाधिक प्रचलित तरीका है। मतदान की प्रक्रिया मतदाता के व्यवहार के व्यापक आयाम का एक पक्ष है। जैसे–जैसे व्यक्ति का राजनीति के प्रति अनुस्थापन होता है, वह मतदान की प्रक्रिया के द्वारा राजनीति में भाग लेने का निश्चय करता है। कोई भी व्यक्ति निम्नलिखित कारणों से राजनीति में भाग लेता है।

राजनीतिक कारक

व्यक्ति के राजनीति में भाग लेने के पीछे राजनीतिक तत्व की महत्वपूर्ण भूमिका है। विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं का संगठित स्वरूपा नागरिकों की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाता है। यदि राजनीतिक संचार उत्तम हो तो राजनीतिक भागीदारी बढ़ जाती है।

नागरिक उत्तरदायित्व की भावना

उत्तरदायित्व की भावना से प्रेरित होकर ही नागरिक राजनीति में भाग लेता है। एक नागरिक होने के कारण व्यक्ति मतदान करना अपना उत्तरदायित्व समझता है तथा निर्वाचनों के समय मताधिकार का प्रयोग कर राजनीति में भाग लेता है। नागरिक उत्तरदायित्व की भावना सभी रानीतिक व्यवस्थाओं में समान नही होती अपितु इसका स्तर व्यक्तियों की राजनीतिक चेतना, दलीय पहचान, राजनीति में रूचि आदि तत्वों से निर्धारित होता है।

मनोवैज्ञानिक कारण

व्यक्ति के राजनीतिक में भाग लेने का कारण मनोवैज्ञानिक तत्व भी है। व्यक्ति की प्रकृति है कि वह अलगाव में नही रहना चाहता है। अतः वह दूसरे व्यक्तियों के साथ समायोजन अथवा साहचर्य की भावना बनाकर रहना चाहता है। राजनीति में सहभागिता यह अवसर प्रदान करती है कि वह अलगाव से मुक्त होकर दूसरों के साथ साहचर्यता प्राप्त कर राजनीतिक वातावरण के विषय में जानने का प्रयत्न करता है। यह जिज्ञासा उसे मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के फलस्वरूप राजनीति में भाग लेने का प्रेरित करती है।

उपरोक्त सभी तत्वों के समायोजित प्रभाव से व्यक्ति मताधिकार के प्रयोग द्वारा राजनीति में भाग लेता है।

मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्व

प्रत्येक मतदाता को मतदान की प्रक्रिया में दो निर्णय लेने होते हैं, प्रथम यह कि क्या वह मताधिकार का प्रयोग करेगा एवं दूसरा, अपना मत किस दल अथवा प्रत्याशी को दे। मतदाता के इन निर्णयों को प्रभावित करने में विभिन्न तत्व मुख्य भूमिका निभाते हैं। ये तत्व विविध एवं जटिल हैं, भिन्न–भिन्न चुनाव क्षेत्रों, राज्यों एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं में भिन्न हो सकते हैं। मतदान व्यवहार के निर्माणक तत्वों को निम्न वर्गों में बाँटा जा सकता है–

राजनीतिक तत्व

विभिन्न राजनीतिक तत्वों की मतदान व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है–ये कारक निम्नलिखित हैं–

दलीय पहचान

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण राजनीतिक तत्व दलीय पहचान है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं में अधिकांश मतदाताओं का किसी न किसी रूप में किसी दल के प्रति झुकाव होता है एवं उसी दल को अपना मत देता है।

प्रत्याशी अनुस्थापन

प्रत्याशी के व्यक्तिगत गुण, उसके द्वारा की गई चुनाव अपील मतदाताओं को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसका प्रभाव अधिकांश उस स्थिति में अधिक होता है जब दलीय पहचान अधिक सुदृढ़ नही हो।

मुद्दों संबंधी अनुस्थापन

विभिन्न मुद्दों को लेकर भी मतदाता किसी एक दल अथवा प्रत्याशी के पक्ष–विपक्ष में मतदान करने का निश्चय लेता है। मतदान करते समय मतदाता स्थानीय एवं राष्ट्रीय मुद्दों से प्रभावित होता है। भारतीय राजनीति में सदैव ही स्थानीय एवं विशेष रूप से राष्ट्रीय मुद्दों पर मतदाता ने मतदान किया है। भारतीय राजनीति में अयोध्या राममंदिर का मुद्दा ऐसा रहा है जिसके आधार पर मतदाता ने मतदान किया है सरकार की विगत वर्षों की कुशलता मतदाता के व्यवहार को प्रभावित करती है। भारत के सन्दर्भ में 1989, 1991, 1996 के आम चुनावों के परिणाम यह साबित करते हैं कि सरकार की कुशलता का मत व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। 2014 तक भारतीय मतदाता सरकार की भ्रष्ट नीतियों से त्रस्त हो चुके थे अतः उन्होंने चुनाव के अवसर पर 2014 में सतारूढ़ दल के विरूद्ध अपने मत का प्रयोग कर अपना आक्रोश व्यक्त किया।

पर्यावरण सम्बन्धी तत्व

पर्यावरण मतदान व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण तत्व है। इसमें वे सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ सम्मिलित हैं। जिनमें रहकर मतदाता अपने मत का प्रयोग करता है। पर्यावरण दृष्टिकोण में मतदाता व्यवहार के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक निर्माणक तत्व होते हैं। ये निर्माणक तत्व है–उस राज्य की व्यवस्था, अन्तर्राष्ट्रीय

व्यवस्था में उसका स्थान तथा व्यवस्था को प्रभावित करने वाले आन्तरिक एवं बाह्य तत्वों का पारस्परिक प्रभाव।

समाजशास्त्रीय तत्व

जो भी चुनाव अध्ययन किये जाते हैं उन सभी में समाजशास्त्रीय तत्वों की मतदान व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सामाजिक तत्व व्यक्ति की राजनीतिक प्राथमिकताएँ तय करते हैं। समाजशास्त्रीय तत्व में भाषा, धर्म, जाति, शिक्षा, व्यवसाय, कुटुम्ब आदि महत्वपूर्ण हैं।

भारत के सन्दर्भ में हुए चुनाव अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि चुनावों में किसी एक तत्व की पृथक रूप से कोई निर्णायक भूमिका नही रहती। इन तत्वों का प्रभाव राजनीति के स्तर के अनुसार रहता है। पंचायत के चुनाव में भूमिका सर्वाधिक राज्यों की विधान सभाओं के चुनावों में कम एवं लोकसभा के चुनावों में उससे भी कम रहती हैं।

भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले तत्व

भारत जैसे विशाल देश में मतदान व्यवहार का अध्ययन एक बहुत कठिन समस्या है क्योंकि अधिकांश उत्तरदाता इससे संबंधित प्रश्नों का उत्तर सही नहीं देते तथा अपने राजनीतिक दलीय सम्बन्धों को सही–सही बताने में संकोच करते हैं। एक मतदाता प्रजातंत्रीय व्यवस्था में अपनी आस्था एवं निष्ठा व्यक्त करने के लिए मताधिकार का प्रयोग करता है। भारत में आचरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों को प्रमुखतः हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं जो इस प्रकार है–

1. राजनीतिक कारक
2. सामाजिक आर्थिक कारक

राजनीतिक कारक

भारत में मतदान आचरण राजनीतिक कारकों से प्रभावित होता हैं राजनीतिक कारक में निम्नलिखित कारक आते हैं–

दलीय प्रतिबद्धता

मतदान आचरण को प्रभावित करने वाला एक कारक दलीय प्रतिबद्धता एव ंदल विशेष के प्रति निष्ठा है। प्रत्येक दल के निष्ठावान कार्यकर्त्ता दलीय प्रत्याशियों को मत देते हैं तथा अन्य मतदाताओं को भी दलीय समर्थन देने के लिए प्रभावित करते हैं।

दलीय नीतियाँ

भारत में अधिकार राजनीतिक दलों की नीतियाँ गरीबी एवं इससे सम्बन्धित सामाजिक समस्याओं के समाधान की होती है तथा इससे संबंधित विभिन्न नारे भी चुनावों के समय लगाये जाते रहे हैं जो कि निर्धन वर्ग के मतदाताओं को प्रभावित करते हैं।

राजनीतिक प्रश्न

प्रत्येक चुनाव कुछ राजनीतिक प्रश्नों, समस्याओं एवं मुद्दों के आधार पर लड़ा जाता है। ऐसे मुद्दे मतदाता को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए 1991 के आम चुनाव में कांग्रेस को बहुमत न मिलने का करण विपक्षी दलों द्वारा अयोघ्या में राम मंदिर निर्माण को चुनाव का मुद्दा बनाया जाता रहा था। विभिन्न मुद्दे चुनावों में महत्वपूर्ण भूमिका में बने रहते हैं।

चमत्कारी दलीय नेतृत्व

मतदान आचरण को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक चमत्कारी दलीय नेतृत्व है। भारतीय राजनीति में अनेक चेहरे ऐसे रहे हैं जो मतदाताओं को अपने नेतृत्व क्षमता से प्रभावित करते हैं। जवाहरलाल नहेरू, इंदिरा गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी एवं वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जैसे नेताओं का व्यक्तित्व चमत्कारी रहा है जिनकी नेतृत्व क्षमता से प्रभावित होकर मतदाता अपने मत इनके पक्ष में करते हैं।

स्थानीय सत्ता संरचना

जिन राजनीतिक दलों के द्वारा स्थानीय स्वायत्त संस्थाओं का संचालन किया जाता है वे स्थानीय मतदाताओं को प्रभावित करने में अधिक अच्छी स्थिति में होते हैं। स्थानीय नेता स्थानीय मुद्दों को आधार बनाकर मतदाताओं को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।

उपर्युक्त कारकों के अतिरिक्त भारत में मतदान आचरण को कुछ अन्य सामाजिक–आर्थिक कारक प्रभावित करते हैं जिनमें आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय एवं ग्रामीण व नगरीय निवास स्थान आदि प्रमुख है।

सामाजिक आर्थिक कारक

भारत जैसे देश में मतदान निर्वाचन क्षेत्र, राज्य विशेष तथा मतदाताओं के सामाजिक, आर्थिक परिवेश द्वारा प्रभावित होता है। रजनी कोठरी, एम0 वीनर आदि विचारकों का यह मानना है कि भारतीय मतदाता सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश से प्रभावित होता है। सामाजिक आर्थिक कारक निम्न प्रकार हैं–

धन

मतदान आचरण को प्रभावित करने वाला एक आर्थिक तत्व धन है। भारत में चुनावों के दौरान मतदाताओं को आर्थिक लाभ पहुँचाना, आर्थिक प्रलोभन देना एवं निर्धारित धनराशि से अधिक धन खर्च करना आदि चुनावी संहिता के विरूद्ध है परन्तु चुनाव के समय इसका स्पष्ट उल्लंघन होता है मतदाताओं को शराब आदि के लिए धन का दान दिया जाता है।

जाति

भारत विभिन्न जातियों का देश है। यहाँ पर मतदान जाति के आधार पर किया जाता है। भारतीय मतदाताओं में यह प्रवृत्ति देखी जाती है कि अधिकांश रूप से ब्राह्मण प्रत्याशी को, राजपूत प्रत्याशी को जाट, गुर्जर आदि जातियाँ आधारित को प्राथमिकता देती है। जाति आधारित मतदान के केन्द्रीय स्तर की राज्य स्तर एवं स्थानीय स्तर पर अधिक देखी जाती है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा आन्ध्र प्रदेश आदि राज्यों में जातिगत प्रभाव अधिक दिखाई देता है।

क्षेत्रीयता

क्षेत्रीयता एवं प्रादेशिकता की भावनाएँ मतदान आचरण को प्रभावित करती है। भारत में राज्य स्तरीय एवं क्षेत्रीय दलों का विकास इसी का परिणाम है। लोक सभा चुनावों में मतदाता ऐसे प्रत्याशियों का समर्थन करते हैं जिन्हें वे अपने क्षेत्र के हितों की रक्षा करने में सक्षम मानते हैं।

परिवार एवं नातेदारी

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने में परिवार एवं नातेदारी का प्रमुख एवं महत्वपूर्ण स्थान है। ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में दलों के प्रति वचनबद्धता से अधिक निष्ठा परिवार एवं नातेदारी के प्रति है। यद्यपि वर्तमान में शिक्षा एवं राजनीतिक चेतना से यह प्रवृत्ति कम हो रही है।

धर्म

धर्म एक ऐसा कारक है जो मतदान आचरण को प्रभावित करता है। भारत में अकाली दल, मुस्लिम लीग, शिव सेना, हिन्दू महासभा आदि दलों का गठन धर्म के आधार पर किया गया है। साम्प्रदायिक दल साम्प्रदायिकता के आधार पर मतदान कराने का प्रयत्न करते हैं।

गुटबंदी

भारत में मतदान आचरण को प्रभावित करने वाला एक कारक गुटबन्दी है। एम0 वीनर के अनुसार गुटबन्दी ग्राम से लेकर राज्य एवं राष्ट्र स्तर तक राजनीतिक जीवन की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

वर्ग

भारत में वर्गीय आधार पर मतदान आचरण प्रभावित हो रहा है। राजनीतिक दल सभी वर्गों का समर्थन लेने का प्रयत्न करते हैं। कुछ राजनीतिक दल केवल विशिष्ट वर्गों के समर्थन पर आधरित होते हैं। उदाहरण के लिए साम्यवादी दल श्रमिक वर्गों के मतों पर निर्भर करते हैं। राजनीतिक दलों का गठन भी काफी सीमा तक वर्गीय आधार पर होने लगा है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त कारकों में से किसी एक कारक को ही मतदान आचरण में महत्वपूर्ण निर्धारक नहीं माना जा सकता वरन् ये सभी कारक सामूहिक रूप से मतदान आचरण को प्रभावित करते हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र के लोकतंत्र की सफलता वहाँ के मतदाता के मतदान व्यवहार पर निर्भर करती है। अतः मतदान करते समय प्रत्येक व्यक्ति को जाति, धर्म, व्यक्तिगत हित, प्रलोभन आदि से ऊपर उठकर अपने मत का प्रयोग करना चाहिए ताकि राजनीति में योग्य उम्मीदवार का चयन किया जा सके जिससे कि वह भविष्य के लिए नीतियाँ बनाने में उपयुक्त निर्णय ले सकें। योग्य उम्मीदवारों के चयन के लिए शासन एवं प्रशासन की मिलकर चुनाव की प्रक्रिया को स्वच्छ व पारदर्शी बनाने का प्रयास करना होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Donald Stocks E. : Voting in David Shil's Vol. 16, Pg. -387*
2. *G. Almond. : Comparative Political System, in Hengg's Political Behaviour : A Reader in Therory and Practice, 1956, Pg. -39*
3. *गैना सी0 बी0 : तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक संस्थाएँ, विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1978, पृष्ठ सं0 65*
4. *कौशिक सुशीला : भारतीय शासन एवं राजनीति हिन्दी माध्यम कार्यालय, दिल्ली, 1974, पृष्ठ सं0 55*
5. *कोठारी रजनी : पार्टी सिस्टम एण्ड इलेक्शन स्टडीज, बोम्बे, 1967*
6. *शर्मा अशोक : भारत में लोकतंत्र एवं निर्वाचन, अनुसंधान व विशद् अध्ययन संस्थान, जयपुर, 1984, पृष्ठ सं0 6–8*
7. *गैना सी0 बी0 : तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक संस्थाएँ, विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1978, पृष्ठ सं0 65*
8. *पानगरिया बी0 एल0 : स्टेट पालिटिक्स इन इंडिया, जयपुर : नेशनल, 1988*
9. *राणावत सीमा, भारत में निर्वाचन प्रणाली : मतदान प्रक्रिया एचवं व्यवहार, आस्था प्रकाशन, 2018, पृष्ठ सं0 21*